12

निर्वासन के बाद का काल

जरुज़्बाबेल की अगुआई में लौटने से पुराने नियम की पुस्तकों के अंत तक, 536-400 ई.पू.

बाबुल की दासता से वापसी की भविष्यवाणी उस दासता की तरह ही स्पष्ट है और यह वापसी सामान्यतया बाबुल के विनाश से जुड़ी हुई थी (तु. यशा. 13; 14; यिर. 25:12; 50; 51; आदि; दानि. 9:1, 2)। यह ध्यान दिया जाएगा कि यिर्मयाह दासता की भविष्यवाणी सज़र वर्ष करता है। एक बंदी कौम की दासता से निकला एक विलक्षण तथ्य है; इतिहास में ऐसा कहीं नहीं मिलता। उनके पास आने के तीन विलक्षण काल थे।

1. जरूज़्बाबेल की अगुआई में वापसी (536 ई.पू.। दानि. 9; एज्रा 1-6)। - भविष्यवाणियों से दानिय्येल को यह पता था कि दासता के सज़र वर्ष पूरे हो गए हैं और उसने अपने लोगों की ओर से सच्चे मन से परमेश्वर के सामने प्रार्थना की। बाबुल को जीतने वाले और फारसी राज्य के संस्थापक कुस्त्रु महान ने शायद दानिय्येल से प्रभावित होकर, यहूदियों को पलिश्तीन लौटने की अनुमति का आदेश जारी कर दिया। शाही परिवार के राजकुमार जरूज़्बाबेल ने लगभग 50 हज़ार लोगों की पहली टुकड़ी की अगुआई की। वे मन्दिर के उन बर्तनों को वापस ले गए जिन्हें नबूकदनेस्सर उठा लाया था। उन्होंने तुरन्त पुरानी जगह पर एक वेदी बनाई और शीघ्र ही जय जय कार के बीच, और बूढ़े लोगों के आसुंओं के बीच जिन्होंने पहले मन्दिर की महिमा देखी थी, दूसरे मन्दिर की नींव रखी। सामरियों ने इस काम में सहयोग देने की अनुमति मांगी। एक मिश्रित जाति और मिश्रित धर्म के साथ समझौते के असर के डर से जरूज़्बाबेल ने सहायता लेने से इन्कार कर दिया। तब सामरियों ने उस काम को रोकने के लिए फारसी दरबार में अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। सोलह वर्ष तक काम बिल्कुल बंद रहा। अंत में, हाग्गै और जकर्याह नबियों की प्रेरणा से काम पूरा हुआ, यद्यपि सामरियों का विरोध बंद नहीं हुआ। तब से लेकर मसीह से आने के समय तक यहूदियों और सामरियों के रिश्ते में बड़ी कड़वाहट थी।

2. रानी एस्तेर की कहानी (एस्तेर 1-10)। पहली और दूसरी वापसी के दौरान कहीं एस्तेर की पुस्तक में वर्णित घटनाएं घटीं। यूनानी और फारसी इतिहास के क्षयर्ष अर्थात अहसुएरस रानी वशती से नाराज होकर उसे तलाक दे देता है। वह एक यहूदी युवती एस्तेर से बिना उसकी राष्ट्रीयता जाने विवाह कर लेता है। एक फारसी दरबारी हामान नई मिली उन्नति से फूला हुआ एस्तेर के अंकल मोर्दकै द्वारा उसके सामने न झुकने के कारण उससे चिढ़ जाता है, और पूरे साम्राज्य में यहूदियों को खत्म करने की योजनाएं बनाता है।

अज्ञानता में अहसुएरस इस आज्ञा पर अपनी मोहर लगा देता है। अपने प्राण को जोखिम में डालकर, एस्तेर बड़े साहस से राजा के दरबार में अपने लोगों के लिए बिनती करने को बिन बुलाए जाती है। उसकी बिनती मान ली जाती है और हामान को उसी फंदे पर लटका दिया जाता है जो उसने मोर्दकै के लिए बनवाया था।

3. एज्रा के शासन में वापसी और सुधार (458 ई.पू.। एज्रा 7-10)। -जरूज़्बाबेल के शासन में लौटने के लगभग अस्सी वर्ष बाद, एक यहूदी याजक एज्रा ने लगभग सात हज़ार लोगों की एक छोटी टुकड़ी की यरूशलेम लौटने में अगुआई की। जरूज़्बाबेल के अधिकतर सहकर्मी मर चुके होंगे। एज्रा को यह जानकर दुख हुआ कि यहूदी लोग सामरियों के साथ अन्तर्विवाह कर रहे हैं और मूसा की व्यवस्था की उपेक्षा कर रहे हैं। उसने बुराइयों को सुधारा, और पुराने नियम के लेखों को सज़्पादित किया। शायद इसी समय पवित्र शास्त्र की शिक्षा अच्छे ढंग से देने के लिए आराधनालय में उपासना की शुरुआत हुई।

4. नहेमायाह की वापसी (445 ई.पू.। नहे. 1-13)। -एस्तेर की कहानी से पता चलता है कि बड़ी संज़्या में यहूदी वापस नहीं आए थे बल्कि बहुत से यहूदी पूरे साम्राज्य में फैल गए थे। बिखर गए इन यहूदियों में नहेमायाह भी था। उसे राजा अर्तक्षत्र लौंगिमेनस के साकी का सज़्मानजनक पद मिल गया था। शूशन में हाल ही में पहुंचे यहूदियों के एक दल से उसे यरूशलेम की बर्बादी और सुरक्षाहीनता का पता चला। उसने यरूशलेम में जाकर उसकी दीवारें बनाने के लिए राजा से अनुमति मांगी। राजा की आज्ञा से उस राज्य का राज्यपाल बनकर वह यहूदिया में गया। सामरियों की ओर से मिलने वाली धमकियों और लगातार परेशानी का सामना करते हुए उसने इतने साहस और शज़्ति से काम किया कि एक हाथ से काम करते और दूसरे हाथ में हथियार पकड़े हुए भी लोगों ने पचास दिन में दीवारें बना डालीं। बारह साल तक नहेमायाह यहूदियों का राज्यपाल बना रहा, जिसे उसने निरुपाय लोगों के बोझ को अपने खर्च पर हल्का करने के लिए उदारता से अपने सरकारी घर बनाए रखा। फिर वह फारस को लौट गया, परन्तु बाद में यरूशलेम में आया जिसमें उसने मिश्रित विवाहों, सज़्त के उल्लंघन और उनमें आने वाली दूसरी बुराइयों का सुधार किया।

5. अंतिम भविष्यवज़्ता और पुराने नियम का अंत। -नहेमायाह के समय में या इससे थोड़ा बाद में, मलाकी द्वारा इब्रानी भविष्यवाणी की अंतिम बात उचरी गई। वह विवाह की वाचा को तोड़ने के लिए याजकों और धर्म में लोगों को औपचारिकता के लिए डांटता है और पुराने नियम की पुस्तक को नये नियम के मसीहा के अग्रदूत, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिए ''एलिय्याह भविष्यवज़्ता'' की भविष्यवाणी करके समाप्त कर देता है।

6. पवित्र इतिहास में विराम। -इस प्रकार पुराने नियम की पुस्तक का अंत हो जाता है। चार सौ वर्ष तक भविष्यवाणी की आवाज शांत हो जाती है। चुने हुए लोग फिर से प्रतिज्ञा किए हुए देश में रहते हैं, परन्तु विशाल साम्राज्य के केवल छोटे से भाग के रूप में। अब वे स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं हैं। वे कष्ट भरे पांच सौ से अधिक वर्ष तक राजनैतिक जीवन में फारस, मकिदुनिया और रोमी शासन के अधीन बिताते हैं जिसमें मकाबियों की अगुआई में राष्ट्रीयता की छोटी सी झलक मिलती है परन्तु राजनैतिक स्वतन्त्रता के ग्रहण ने उनकी राष्ट्रीय विलक्षणता को और

गहराने का काम किया। मसीह से पूर्व चार शताज़्दियों में यहूदियों से जो भी गलतियां हुईं, मूर्तिपूजा उनमें से एक नहीं थी। दासता के अनुशासन, दानिय्येल और उसके साथियों के अच्छे उदाहरण, एज्रा और नहेमायाह के काम से उनमें सदा के लिए सुधार हो गया था। बलवन्त देशों की जबर्दस्ती से थोपी गई मूर्तिपूजा के बीच एक छोटा सा लोगों का समूह था जिसने परमेश्वर की एकता और आत्मिकता को पकड़े रखा; जिसे बहुदेववाद के विश्वव्यापी जंगल में एक मरुद्वीप कहा जाता है। यहूदी मत का कंटीला पेड़ प्रतिज्ञा किए हुए दाऊद के पुत्र और परमेश्वर के पुत्र के आने और विश्वव्यापी प्रेम के उसके धर्म के फूटने तक परमेश्वर की ओर से सज़्भालकर रखा गया था; फिर यह टाइटस और उसकी रोमी सेनाओं द्वारा छेड़े गए युद्ध के तूफ़ान में सदा के लिए बह गया।